ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825 (UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 1 | SEPTEMBER - 2018

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श

प्रा.डॉ. दिलीप कोंडीबा कसबे
हिंदी विभाग, विज्ञान महाविद्यालय, सांगोला.

प्रस्तावना :-

यह एक यथार्थ है कि किन्नर विमर्श विचार - विमर्श है, संवेदना का विमर्श है, अपमानित,उपेक्षित, वंचित एवं शोषित किन्नर का जीवन्त एवं कारुणिक दस्तावेज है। किन्नर आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से शोषित रहे है। वे या तो निरक्षर होते है या केवल साक्षर, अल्पशिक्षित। अतएव नौकरी न होने के कारण, उन्हें कोई काम न देने के कारण वे आर्थिक अभाव में रहते है | उनके लिए शिक्षा, चिकित्सा की कोई सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होती । ऐसी स्थिति में सार्वजनिक स्थलों, बसों, ट्रेन, स्टेशन पर तालियाँ बजाकर भीख माँगना ही विकल्प शेष रहता है। किसी के यहाँ बच्चे का जन्म हुआ हो, विवाह आदि अवसर हो, ये नेग माँगने जाते है । परंतु नगर - महानगरों में सुरक्षा से घिरे फ्लेटों में एवं शादी के मण्डपों आदि में सुरक्षा कर्मचारी इन्हें घुसने ही नहीं देते। सार्वजनिक स्थानों में इन्हें हिकारत से देखा जाता है | विषम आर्थिक स्थिति के कारण भूख शमन हेतु ये सेक्स वर्कर बन जाते है।

- **हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श :**

२१ वी शताब्दी में किन्नर समाज के लिए कई संभावनाएँ दृष्टिगत होने लगी | साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा उपन्यासों में किन्नर विमर्श पर विचार किया गया | इसी दृष्टि से प्रमुख उपन्यास है - यमदीप, मैं भी औरत हूँ, किन्नर तथा - तिसरी ताली - गुलाम मंडी, पोस्ट बॉक्स नं. २०३-नाला सोपारा, मैं पायल, जिंदगी ५०-५० |

१) यमदीप :

नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप' का शीर्षक प्रतिकात्मक है | यमदीप को दीपावली की पूर्व संध्या को घर के बाहर घूरे पर जलाया जाता है | इसलिए वह उपेक्षितही रहता है | यह उपन्यास किन्नर जीवन का यथार्थ आख्यान है, कथा में रंजन नहीं व्यथा है | लेखिका ने यहाँ उनकी पुत्री के जन्म पर बाधावा गाने एवं नेग लेने आये किन्नरों को देखकर उनके संवेदनशील मन में इनके जीवन को लेकर कई प्रश्न उपस्थित हुए | नागफनी के कँटीले- से ये प्रश्नन मन- मस्तिष्क को चुभते रहे, सालते रहे और उन्हीं के उत्तर के रु प में उपन्यास का सृजन हुआ है |

यमदीप अभिशप्त होता है जैसा कि किन्नरों का जीवन भी अभिशाप होता है | लेखिका का के अनुसार पूरक है, एक दूसरे के अर्धांश है | यही स्त्री- पुरु ष मानवनिर्मिती के कारण है | परंतु जहाँ स्त्री एवं पुरु ष दोनों के अतिरिक्त तीसरा लिंग उत्पन्न हो वहाँ यमदीप जैसी कृतियाँ सृजित होती है | उपन्यास का प्रारंभ ही किन्नरों के संवेदनशील एवं मानवतावादी गुणों से होता है | एक पागल स्त्री प्रसव वेदना से तडपती हुई एक बच्ची को जन्म देकर मर जाती है | तब शिष्ट समाज केवल दर्शक बनता है | तब किन्नर नाजबीबी का समाज पर व्यंग्य प्रहार अत्यंत तीक्ष्ण है | "अब कोई पूछनहार नहीं इसका तो क्या हम भी छोड जायेंगे ?अरे ! हम हिंजडे है, हिंजडे, इनसान है क्या जो मुँह फेर ले |"

२) मैं भी औरत हूँ :

इसमें रोशनी एवं मंजुला दो बहनों का जीवन चित्रित है | दोनों अपूर्ण योनि के साथ जन्म लेती है | डॉक्टर के अनुसार बडी बेटी मंजुला का ऑपरेशन कर उसकी योनि विकसित हो सकती है , वह पूर्ण स्त्री बनने के कारण विवाह के पश्चात माँ भी बन सकती है, जबकि, छोटी बेटी रोशनी भी ऑपरेशन के बाद स्त्री बन सकती है परंतु माँ नहीं बन सकी | जैसे - इससे स्पष्ट है कि, डॉक्टर रमण्णा कहती है - "मिसेज चौधरी, बात यह है हक अपकी दोनों बेटियों में भगवान ने कुछ कमी बनाई है, ... अत: यह पत्नी तो बन सकेगी पर माँ नही बन पायेगी ना ही इसे कभी मासिक रक्तस्त्राव होगा |" यहाँ माता-पिता द्वारा दोनों पुत्रियों के किन्नर होने की नियति अस्वीकार कर उनको योग्य चिकित्सा प्रदान कर उनके जीवन को सुखी बनाना, निश्चित ही प्रशंसनीय है | नायिका रोशनी तो उच्चशिक्षित होकर पुणे के एक फर्म में सी.ई.ओ. बन जाती है | उसके जीवन के माध्यम से उपन्यासकारने किन्नर जीवन का यह उज्वल पक्ष चित्रित किया है कि किन्नरों ने अपनी कमजोरी की उपेक्षा कर पढ- लिखकर नारकीय जीवन से मुक्ति प्राप्त करना चाहिए |

३) किन्नर कथा :

महेंद्र भीष्म का उपन्यास किन्नर कथा में उन्होंने अपने चाचा के मुख से एक सच्ची घटना सुनी थी, उसी को आधार बनाकर उपन्यास की कथा प्रस्तुत हुई है | कथा- प्रवाह अनुपम है, रोचकता के कारण कथारस आनन्दानुभूति करता है | पाठक की संवेदना अनुभव करती है कि प्रत्येक किन्नर का एक अतीत होता है | जो स्वाह होता है, नागफनी के काँटों से बिंधा होता है | राजा जगतसिंह बुंदेला के घर भाद्रपद माह की सोमवती अमावस्य को दो जुडवाँ बच्चियों का जन्म होता है | उसमें से एक किन्नर है | जिसका नाम सोना है, जिसे राजा साहब दीवान पंचम सिंह को मार डालने का आदेश देते है | जैसे - "फिर भले ही वह संतान किन्नर ही क्यों न हो फिर भी सामाजिक परिस्थितियों खानदान की इज्जत मर्यादा, झूठी - शान के सामने अपने बच्चें से उसके जन्मदाता हर हाल में छुटकारा पा लेना चाहता है यह एक कटु सत्य है, उसे किन्नरों के डेरे में दे दिया जाता है | वंश- कुल - खानदान के नाम पर उसकी बलि चढा दी जाती है, उसे उसके भाग्य के सहारे छोड दिया जाता है | भुला दिया जाता है, कुडे के ढेर में, नदी नाले में, सड कया ट्रेन की पटरी पर मंदिर मस्जिद की सीढियों पर छोड या फेंक दिया जाता है |" सही कहना है तो दीवान उसकी हत्या करने के बजाए उसे तारा नामक किन्नर गुरु को सौंप देते है | तारा स्वयं एक संग्रात अग्रवाल परिवार की संतान है जिसे किन्नर होने के कारण विस्थापित होना पडा था | सोना की नियती एवं त्रासदी है, कि वह नृत्यकला में पारंगत होती है और संयोग कुछ ऐसा होता है कि अपनी जुडवा बहन रुपा के विवाह में नृत्य करने के लिए आमंत्रित होती है | यह भी एक संयोग है कि रुपा के पती सर्जन है, अतएवं वे सोना के लिंग का ऑपरेशन करवाने उसे अमेरिका ले जाते है |

४) तीसरी ताली :

प्रदीप सौरभ के 'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नर विमर्श के अन्तर्गत किन्नरों की अवांछित, उपेक्षित, शोषित और वर्जित दुनिया का विवेचन हुआ है | इसमें हिजडा होने के कारण कूडे के ढेर पर फेंके गये नवजात बालकों की व्यथा है, माता-पिता का निष्ठुर व्यवहार है | किन्नरों पर लिखे गए उपन्यासों में ऐसा उपन्यास है जिसमें जबरदस्ती पुरुषांग काटकर बनाए हिजडों की विश्वता है | समलैंगिक एवं लेस्बियन संबंधों, अप्राकृतिक यौन, बलात्कार आदि का यथार्थपरक चित्रण है | किन्नर जीवन की भयानक सच्चाई इस उपन्यास की खास पहचान है | "जो उनकी जिंदगी का हर पाठ आत्मदंड, आत्मक्रुरता, चिरयातना का पाठ है |"

५) गुलाम मंडी :

निर्मल भुराडिया का उपन्यास 'गुलाम मंडी' में अत्याधुनिक विश्व की समस्या का विवेचन है | सम्प्रति, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हयूमन ट्रैफिकिंग, अर्थात मानव तस्करी, देह - व्यापार तेजी से पनप रहा है | इसी के साथ किन्नरों की भी समस्या है | अतएवं उपन्यास में इन तीनों आयामों की अभिव्यक्ति हुई है | सम्प्रति, मानव तस्करी मनुष्य की खरीद - फरोख्त के लिए हो रही है | विभिन्न देशों में इसके विरोध एवं इसकी रोकथान के लिए कानून बने है फिर भी विश्व एक गुलाम मंडी बन गया है | उपन्यासकार ने मानव तस्करी, देह व्यापार एवं किन्नर समुदाय की कथा लिखी है | कथा के केंद्र में प्रमुख रुप से कल्याणी एवं जानकी है | कुल पच्चीस खंडो में लिखा गया यह उपन्यास जानकी, लक्ष्मी, अंगूरी, हमीरा, रानी जैसे किन्नरों की कथा एवं चरित्र के माध्यम से किन्नरों के भयंकर जीवन पर भाष्य करता है | जैसे यहाँ अंगुरी किन्नर अपनी व्यथा बताते हुए कहती है कि - "मैं दर-दर मारी फिरती थी क्योंकि मैं ऐसी थी ना | माँ को टी.बी. थी | उसके जीते जी बापने दूसरी शादी कर ली थी | हम छ: भाई बहन थे | मुझे एक को छोड सब पुरे थे | मेरे दाढी मूँछ नहीं निकले | --- फिर एक दिन से मैं सडक के पाइप में सो रही थी एक कुत्ता खाते - खाते आधी रोटी छोड गया था वही खा ली थी | वृंदा गुरु के चेलों ने मुझे देखा तो ले आए शरण में आज बस इतना नहीं | यही है मेरी कहानी |" इस प्रकार हिंदी उपन्यासों में किन्नर जीवन को चित्रित किया गया है |

● सारांश :-

इस समाज का वास्तव यह लगता है कि संवेदना, अपमानित, उपेक्षित, वंचित एवं शोषित किन्नर का कारुणिक दस्तावेज ही है | किन्नर आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, नौकरी, सार्वजनिक स्थानों में हिकारत की दृष्टि से शोषित रहे है | उनके के लिए शिक्षा, चिकित्सा, आर्थिक आदि सुविधाओं की कमियाँ है | मानवीय समाज हिकारत दृष्टि के कारण सार्वजनिक स्थलो, बसों, ट्रेन, स्टेशन, नगरो - महानगरों के फ्लेटों में वैषम्य की वैभिन्यता दिखाई देती है, जिसमें अपनेपन की परिवर्तन की आवश्यकताएँ है |

'यमदीप' उपन्यास में डॉ. नीरजा माधव के अनुसार जब एक पागल स्त्री प्रसव वेदना से तडफती हुई एक बच्ची को जन्म देकर मर जाती है तब समाज केवल दर्शक बनता है | इसपर किन्नर नाजबीबी का समाज पर किया तीक्ष्ण व्यंग प्रहार सोचनीय और वास्तव लगता है | 'में भी औरत हूँ' द्वारा सृजेताने किन्नर जीवन का उज्वल पक्ष चित्रित करते हुए उन्होंने अपनी कमजोरी की उपेक्षा कर पढ-लिखकर नारकिय जीवन से मुक्ति प्राप्त करने की चाह व्यक्त की है | 'किन्नर था' में सोना की नियती एवं त्रासदी चित्रित की है, जो समाज को अंतर्मुख बना देती है | लेखक प्रदीप सौरभ ने 'तीसरी ताली' में माता- पिता के निष्ठुर कर्म पाप को बताया है, जो हिजडा होने के कारण कूढें के ढेर पर फेंके गये नवजात बालकों की व्यथा-कथा चिंता युक्त है | इसलिए आज मानव समाज ने हृदय परिवर्तन कर लेने की अनिवार्यता है | क्योंकि आज विश्व एक 'गुलाम मंडी' बनकर काम कर रहा है | इसमें उपन्यास कार ने मानव तस्करी, देह व्यापार एवं किन्नर समुदाय की व्यथा - कथा लिखी है | मैं संक्षिप्त में कहूँगा कि ये किन्नर जीवन की भयानक सच्चाई इन उपन्यासों की खास पहचान है, मानवीय मन के सुधार के लिए - इसमें मैं सहमत हूँ |

● संदर्भ सूची :-

१) डॉ. नीरजा माधव - यमदीप |
२) डॉ. अनुसूया त्यागी - मैं भी औरत हूँ |
३) महेंद्र भीष्म - किन्नर कथा |
४) प्रदीप सौरभ - तीसरी ताली |
५) निर्मला भुराडिया - गुलाम मंडी |